धर्मों के बीच वार्तालाप - सिद्धान्त व शिष्टाचार

आज दिनांक 7 फ़रवरी 2016 ई0 को प्रस्ताव कमेटी की मीटिंग में धर्मों के बीच वार्तालाप, उसूल व शिष्टाचार के विषय पर विचार मनन के बाद निम्न प्रस्ताव आम सहमति से तैयार हुए।

1- धार्मिक, समाजी और राजनीतिक बुनियादों पर धर्मों के बीच वार्तालाप किए जा सकते हैं बशर्तेकि इन वार्तालाप से मुसलमानों की धार्मिक धारणाएं। व अक़ीदे प्रभावित न हों और उनको उदारता शान्तिमय आम जीवन, दीन की दावत, ग़लत फ़हमियों का निवारण और समाजी व राजनीतिक मुश्किलात के हल के लिए इस्तेमाल किया जाए।

2- विभिन्न धर्मों के बीच कुछ मूल्य समान हैं इस लिए हितकारी उद्देश्यों के लिए अन्य धर्मों की किताबों से लाभ उठाना और हवाला की गुंजाइश है।

3- अन्य धर्म वालों की धार्मिक रस्मों व कर्मों में शिर्कत जायज़ नहीं।

4- अनुकूलता बरक़रार रखने, फ़ितना व फ़साद से बचने के लिए आम हालात में ऐसे मुबाह अमल से अलग होना सही नही जो मुसलमानों की सभ्यता एवं संस्क्रति का हिस्सा हैं।

5- एकेश्वरवाद का अक़ीदा व रिसालत दुनिया की क़ौमों के सामने पेश करना और क़ुफ़र व शिर्क की रस्मों व कर्मों से अलग होने का इज़हार करना मुसलमानों का दीनी कर्तव्य है अलबत्ता इस बात की पूरी कोशिश की जाए कि अलग होने का ऐलान करने के लिए ऐसे अन्दाज़ व तरीक़े न अपनाए जाएं जिनसे अन्य धर्म वालों के दिल को ठेस पहुंचे।

6- स्वस्थ मानव समाज के निमार्ण के लिए संयुक्त समाजी मसाइल जैसे ग़रीबी भ्रष्टाचार, अशलीलता, औरतों, मज़दूरों और वृद्ध लोगों के साथ अत्याचार आदि पर विभिन्न धर्मों वालों के साथ वार्तालाप समय की अहम ज़रूरत है और मुसलमानों को इसमें हिस्सा लेना चाहिएं

7- मुसलमानों के धार्मिक, राष्ट्रीय और सामूहिक हितों की सुरक्षा के लिए विभिन्न राजनीतिक जमाअतों, धार्मिक संस्थाओं और अहम हस्तियों के साथ यथा आवश्यकता शरअी उसूलों की रिआयत करते हुए वार्तालाप करना न केवल जायज़ बल्कि सराहनीय है।

8- धर्मों के बीच वार्तालाप को फ़लदार बनाने के लिए निम्न लिखित क़दम उठाना लाभकारी हो सकता है:

अः वार्तालाप की योग्यता व क्षमता रखने वाले इस्लामी स्कालर्स का एक फेडरेशन बनाया जाए।

बः हर राज्य के प्रमुख दीनी मदरसों और दर्सगाहों में तुलनात्मक अध्ययन, विभिन्न धर्मों पर विशेष ध्यान दिया जाए और इसके लिए एक विशेष विभाग स्थपित किया जाए।

जः देश की विभिन्न यूनिवर्सिटियों और शोध संस्थानों में मौजूद धर्मों व दीनों के विभागों से निरंतर

सम्पर्क रखा जाए और उनसे लाभ उठाने की भरपूर कोशिश की जाए।

दः विभिन्न दीनों व धर्मों के ज़िम्मेदारों का एक संयुक्त प्लेटफ़ार्म बनाया जाए जिसके प्रोग्राम यदा कदा देश के विभिन्न महत्वपूर्ण इलाक़ों में आयोजित किए जाएं।

हः देश की विभिन्न धार्मिक संस्थाओं और संस्थानों से पृत्यक्ष रूप से वार्तालाप का सिलसिला आरंभ करने के व्यवहारिक क़दम उठाए जाएं।

वः मुसलमानों में समाज सेवा के रुझानों को बढावा देने की कोशिश की जाए और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कल्याणकारी संस्थाएं (छः) स्थापित की जाएं और इस उद्देश्य के लिए स्थापित संस्थानों के अनुभवों से लाभ उठाया जाए।

☆☆☆

नोटः 25 वां फ़िक़्ही सेमिनार (बदरपुर, असम) दिनांक 25 से 27 रबीउस्सनी 1437 हि0 - 5-7 फ़रवरी 2016 ई0